02 अक्टूबर 2007, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

विकारी भावों का परित्याग एवं उदात्त भावों का ग्रहण ही दशलक्षण धर्म का आधार है, जो सभी को समानरूप से हितकारी है।
ह्न धर्म के दशलक्षण, पृष्ठ-3

वर्ष : 30, अंक : 13 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
अक्टूबर (प्रथम), 2007 प्रबन्ध सम्पादक : **पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

दशलक्षण महापर्व धूमधाम से सम्पन्न

दिनांक 16 सितम्बर से 25 सितम्बर, 2007 तक जैन परम्परानुसार मनाये जानेवाले सार्वभौमिक एवं त्रैकालिक दशलक्षण महापर्व को सम्पूर्ण देश-विदेश में बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट से 532 स्थानों पर विद्वान भेजे गये। पर्व के दौरान सभी स्थानों पर जैनमंदिरों में पूजन-विधान, प्रवचन, प्रौढ़ ,एवं बालकक्षा, भक्ति, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि के माध्यम से महती धर्म प्रभावना हुई। देश के कोने-कोने से प्राप्त समाचारों में से मात्र जयपुर महानगर के समाचारों को यहाँ प्रकाशित किया जा रहा है; शेष समाचार अगले अंक में प्रकाशित किये जायेंगे।

1. **श्री टोडरमल स्मारक भवन :** यहाँ पर्व के अवसर पर प्रात: महिला-मंडल बापूनगर के सहयोग से महाविद्यालय के छात्रों द्वारा दशलक्षण मंडल विधान का आयोजन किया गया। विधानोपरांत गुरुदेव श्री के सी.डी. प्रवचन के पश्चात पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, जयपुर के मोक्षमार्ग प्रकाशक के चौथे अधिकार पर प्रवचन हुए साथ ही दोपहर में पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री, जयपुर की मोक्षशास्त्र की कक्षा तथा रात्रि में पण्डित नीतेशकुमारजी शास्त्री, जयपुर के दशधर्मों पर हुए प्रवचनों का लाभ भी समाज को मिला। इसके अतिरिक्त अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किये गये।

2. **श्री मुलतान दिगम्बर जैन मंदिर, आदर्शनगर :** यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित रमेशचंदजी (लवाण वाले) के दोनो समय प्रभावी प्रवचनों का लाभ समाज को मिला।

3. **श्री दिगम्बर जैन मंदिर, मालवीय नगर से. 10 :** यहाँ पण्डित विनयकुमारजी पापड़ीवाल, जयपुर द्वारा धर्म-प्रभावना हुई।

4. **श्री दिगम्बर जैन मंदिर, हरिमार्ग, सिविल लाईन्स :** यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित संजयकुमारजी सेठी, जयपुर के प्रवचन हुये।

5. **श्री दिगम्बर जैन मंदिर, जनता कॉलोनी :** यहाँ पर भी पण्डित संजयकुमारजी सेठी, जयपुर के प्रवचनों का लाभ मिला

6. **श्री दिगम्बर जैन मंदिर, मानसरोवर-वरुणपथ :** यहाँ डॉ. नरेन्द्रकुमारजी शास्त्री के प्रवचन हुए।

7. **श्री दिगम्बर जैन मंदिर, महात्मा गांधीनगर:** यहाँ पण्डित दिनेशकुमारजी शास्त्री, जयपुर के प्रवचनों से धर्म-प्रभावना हुई।

8. **श्री दिगम्बर जैन मंदिर, बड़ेदीवानजी, राजस्थान जैनसभा :** यहाँ पण्डित राजेशजी शास्त्री, शाहगढ़ द्वारा धर्मचर्चा की गई।

9. **श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, शक्तिनगर :** यहाँ पण्डित मनीषकुमारजी शास्त्री के प्रवचन हुए। **(शेष पृष्ठ 8 पर...)**

कहानी सम्पादकीय

स्वर्ग वासहूँ नीको नाही

ह्न पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

यह कौन नहीं जानता कि जवाहरातों की नगरी पिंकसिटी जयपुर का नाम अब भारत के उन गिने-चुने नगरों में अग्रगण्य हो गया है, जो सौंदर्यकरण, स्वच्छता और नगर की सुव्यवस्थित बसावट आदि सभी दृष्टियों से सर्वश्रेष्ठ नगरों की श्रेणी में आते हैं।

परकोटे के भीतर पुरानी घनी-बस्ती की बड़ी-बड़ी हवेलियों में रहनेवाले श्रीमंत तो धीरे-धीरे परकोटे के बाहर आधुनिक ढंग से बसाये गये अनेक उपनगरों में बड़े-बड़े बंगले बनाकर एवं बहुमंजिला नवनिर्मित इमारतों में रहने ही लगे हैं, परकोटे के भीतर के भवनों एवं बाजारों को भी सुव्यवस्थित करने में नगर निगम एवं जयपुर विकास प्राधिकरण द्वारा कोई कसर नहीं रखी जा रही है।

अनधिकृत निर्माणों को तोड़कर चौड़े रास्तों को और चौड़ा किया जा रहा है तथा छोटी-बड़ी गलियों को भी यथासंभव चौड़ा करने की योजनायें तेजी से सफलता की ओर अग्रसर हैं।

नगरनिगम की सजगता और सक्रियता से मुहल्ले-मुहल्ले में बने पार्कों की छटा तो दर्शनीय है ही, यहाँ प्रात: शाम घूमने-फिरने वाले वृद्धों, प्रौढ़ों और खेलने-कूदने आनेवाले बालकों की चहल-पहल से पार्कों की शोभा में और भी चार चाँद लग जाते हैं और इससे पार्कों की उपयोगिता में भी अभिवृद्धि हो रही है। पूरे नगर में हरियाली ही हरियाली है, प्राकृतिक दृश्य भी आकर्षण के केन्द्र बने हुए हैं।

जयपुर के एक से बढ़कर एक कृत्रिम और प्राकृतिक पर्यटन केन्द्र देश-विदेश के पर्यटकों को बरबस अपनी ओर आकर्षित करते हैं

नगर प्रगतिशील हो, प्रदेश और देश भी दिनोंदिन प्रगति की ओर अग्रसर हों, यह अति उत्तम बात है। देश को प्रगतिशील देखकर किसे प्रसन्नता नहीं होगी ? हमें भी प्रसन्न होना ही चाहिए; परन्तु व्यक्तिगत रूप से देखें तो अपने जीवन का दूसरा पहलू भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है । जब हम दूसरे पहलू पर दृष्टिपात करते हैं तो इस भौतिक भोग प्रधान जीवन से हमारा चित्त विरक्त हो जाता है। हमें लगता है कि संयोग कितने ही सुन्दर क्यों न हों, जब हम ही न रहेंगे तो हमारे लिए सारे विश्व का वैभव भी तृण तुल्य ही है। **(शेष पृष्ठ 4 पर...)**

शिविर पत्रिका

शिविर पत्रिका

(पृष्ठ 1 का शेष ...)

मन में भाव आता है कि इस सबसे हमें क्या ? हम तो आज बारूद के ढेर पर बैठे हैं। एक पल का भरोसा नहीं कि यह जीवन का खेल कब खत्म हो जाए।

एक तो मानव जीवन स्वभावत: पानी के बुल–बुले के समान क्षणिक है, जो कभी भी पल भर में पंचभूत में विलीन हो सकता है। दूसरे, जानलेवा शारीरिक और मानसिक बीमारियाँ पल भर भी सुख–शान्ति से जीने नहीं देतीं। तीसरे, स्वार्थ और मिथ्या अभिमान से भरे मानवों के आपसी टकराव के कारण आतंकवाद के भूत का भय सिर पर सवार रहता है। मानो यमराज ही मुंहवायें खड़ा हो। इसतरह चारों ओर से मौत के बादल छाये हुए दिखते हैं।ऐसे में कौन निराकुलता से रह सकता है ? किस आतंकवादी के मस्तिष्क में कब पागलपन का दौरा आ जाये? या कब यह सनकी मानव एक जाम अधिक पीकर सनक जाये और एक ही पल में पूरा प्रगतिशील विश्व बर्बाद हो जाय, यह किसी को पता नहीं है। ऐसी विषम परिस्थितियों में ये भौतिक प्रगति हमारे किस काम की ?

इस संसार में सुधार की संभावनायें तो हो नहीं सकतीं; क्योंकि संघर्ष का नाम ही तो संसार है। यहाँ सभी मोह, राग, द्वेष और विषय–कषायों में आकंठ निमग्न हैं। यह विश्व सुधर सकता होता तो कभी का सुधर गया होता। जब तीर्थंकर तुल्य अतुल्य बलशाली स्वयं इस संसार से विरक्त होकर इसे छोड़ कर चले गये तो अन्य की तो बात क्या है? कहा भी है ह्न ''**जो संसार विषैं सुख हो तो तीर्थंकर क्यों त्यागें।**''

सेठ मनमोहन ने अपनी सारी जिन्दगी जयपुर के परकोटे के भीतर की पुरानी बस्ती की अंधेरी गली के दो कमरों में गुजार दी, पर वह जिन्दगी भर बंगले में रहने का सपना देखता रहा और इसके लिए नीति–अनीति की परवाह न करके येन–केन प्रकारेण धनार्जन किया और करोड़पति बनने के प्रयासों में सफल हो गया। अपनी इस भौतिक सफलता के फेर में हर्ष–विषाद के रूप में उसे जो आर्त–रौद्र ध्यान हुआ वह तो हुआ ही; परन्तु संयोग से कहें या पूर्व पुण्य के फल में एक दिन वह भी आया, जब उसे परकोटे के बाहर पूर्ण विकसित कॉलोनी में नव–निर्मित **स्वर्ग** नामक बहु मंजिला इमारत में मनचाही सबसे ऊपर की पूरी मंजिल मिल गई और उसने उसमें लगभग एक करोड़ की लागत से सभी आधुनिक सुविधाओं से संयुक्त स्वर्ग जैसा विशाल आवास बनाया। उसने उस आवास का नाम भी **इन्द्रलोक** रखा।

सेठ मनमोहन का सबसे बड़ा सपना तो पूरा हुआ, फिर क्या था, वह उसमें ऐसा रम गया, मानो अब वह अनन्त काल तक इस भोगोपभोग सामग्री का मनमाने ढंग से उपभोग करता रहेगा; परन्तु कुछ ही समय प्राप्त भोग सामग्री का सुखानुभव नहीं कर पाया कि आयकर विभाग ने उसे धर दबोचा। वाशिंग मशीन में करेन्ट आ जाने से पत्नी की मौत हो गई। छत पर बने स्वमिंगपूल में डूबने से प्यारा पोता चल बसा। अभी–अभी खरीदी नई कार के एक्सीडेन्ट से बेटा कौमा में चला गया। इस तरह पापानुबंधी पुण्य से प्राप्त उस भोगोपभोग सामग्री के द्वारा ही उस पर एक साथ अनेक मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा।

अब सेठ की समझ में आया कि पण्डितजी ने प्रवचन में ठीक ही कहा था ह्न ''अनुकूल–प्रतिकूल संयोग–वियोग होना तो सब पुण्य–पाप का खेल है, इसमें हर्ष–विषाद करने से संसार की परम्परा ही निरंतर वृद्धिंगत होती है। अत: जो भी हुआ उसमें समता भाव रखना ही श्रेयस्कर है। मैंने भी अबतक अधिकांश पाप भावों के सिवाय और किया ही क्या है ?

भले ही जवाहरात के व्यवसाय में कोई जीव हिंसा नहीं होती, परन्तु राग–द्वेष भाव के रूप में हिंसानन्दी रौद्रध्यान, झूठ बोलकर धनार्जन में मृषानन्दी रौद्रध्यान, नम्बर दो के काम में चौर्यानन्दी रौद्रध्यान एवं धन संग्रह में परिग्रहानन्दी रौद्रध्यान तो होता ही है, जिसका फल नरक निवास है, उसकी तुलना में अभी मुझे जो भी दु:खद फल मिला है, वह तो बहुत कम है। यदि अब भी मेरा वैसा ही आर्त–रौद्र ध्यान चलता रहा तो आगे भी नि:संदेह तिर्यंच एवं नरक के भयंकर दु:खों में पड़ना ही पड़ेगा।

सेठ मनमोहन ने पत्नी के निधन के शोकपत्र में '**मेरी पत्नी का स्वर्गवास हो गया**' यह लिखवा कर जहाँ–तहाँ डाल तो दिए; परन्तु उसे बाद में बारम्बार विचार आया कि क्या सचमुच मेरी पत्नी का **स्वर्गवास** हुआ है ? उसे तत्त्व रुचि तो थी नहीं। पण्डितजी के प्रवचनों में कभी बैठी नहीं। संतानों के संयोग–वियोग में हर्ष–विषाद ही करती रही। गहनों और कपड़ों के संग्रह के रूप परिग्रह संग्रह की गृद्धता भी भरपूर थी। इन बातों को देखकर तो नहीं लगता कि स्वर्गवास हुआ होगा।

यद्यपि समय–समय पर दर्शन–पूजन, तीर्थयात्रा और दान–पुण्य जरूर किया करती, पर वह सब लौकिक मनो कामना के उद्देश्य से ही करती थी, उसे यह कुछ भी तो पता नहीं था किह्नमुक्ति का स्वरूप क्या है ?, मुक्ति का मार्ग क्या है ? सच्चे देव–शास्त्र–गुरु का स्वरूप क्या है ?, पूजा क्यों की जाती है ?, पूजा करने का प्रयोजन क्या है ?

गृहीत–अगृहीत मिथ्यात्व क्या है ? इसका भी तो उसे ज्ञान नहीं था? भला, उसे स्वर्ग कैसे मिल सकता है ? मान लो, मिल भी गया होगा तो उसके लिए भोगों के सिवाय वहाँ है भी क्या? जीवन भर भोगों में अनुरक्त रहने और मरने के ६ माह पहले मंदार माला के मुरझाते ही मरण जानकर आकुल–व्याकुल होकर प्राणत्याग कर एकेन्द्रिय पर्याय में आकर फिर चौरासी लाख योनियों में ही तो चक्कर काटना पड़ेगा। सम्यग्दर्शन के बिना ऐसे **स्वर्गवास** से भी क्या लाभ ?

यद्यपि स्वर्ग में शारीरिक दु:ख नहीं है, परन्तु वहाँ मानसिक दु:ख बहुत है; क्योंकि वहाँ भी यहाँ के राजा की भांति इन्द्र, युवराज की भांति सामानिक, केबिनेट मिनस्टरों की भांति त्रायत्रिंसत्, परिषद्, आत्मरक्ष, लोकपाल, अनीक (सैनिक), प्रकीर्णक (पुरवासी) आभियोग (सवारी के काम आनेवाले देव) और किल्विश (पाप बहुल) जाति के दस प्रकार के देव होते हैं। आभियोग और किल्विस सबसे कम पुण्यवाले होते हैं। जिस हाथी पर सवार होकर सौधर्म इन्द्र तीर्थंकर के जन्मकल्याणक में आता है, वह ऐरावत हाथी आभियोग जाति का देव ही तो है।

ये दस प्रकार के देव क्रमश: हीन–हीन पुण्यवाले इन्द्र के अधीनस्थ–सेवक होते हैं। नीची श्रेणी के देव उच्च पदवाले देवों के पद एवं वैभव को देखकर दु:खी रहते हैं। वे सोचते हैं, काश ! ये उच्चपद हमें प्राप्त होते।

स्वर्ग में बे–मौत मर कर भी तो उस दु:ख से जल्दी छुटकारा नहीं पा सकते, क्योंकि वहाँ की आयु अनपवर्त्य होती है। इसकारण सागरों पर्यन्त उस मानसिक पीड़ा को सहना ही पड़ता है।

पण्डित भागचन्दजी ने ठीक ही कहा है ह्न **स्वर्ग वासहूँ नीकौ नाहीं**

तत्त्वचर्चा

छहढाला का सार 15

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

सम्यग्ज्ञान की महिमा बताने के उपरान्त अब सम्यक्चारित्र की बात करते हैं। सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञानपूर्वक होनेवाला चारित्र दो प्रकार का होता है ह्न एकदेशचारित्र और सकलदेश–चारित्र।

एकदेशचारित्र में हिंसादि पापों का एकदेश त्याग और अहिंसादि व्रतों का एकदेश पालन होता है और सकल देशचारित्र में हिंसादि पापों का पूर्णत: त्याग और अहिंसादि व्रतों का पूर्णत: पालन होता है।

यही कारण है कि एकदेशचारित्र में होनेवाले व्रतों को अणुव्रत और सकलदेशचारित्र में होनेवाले व्रतों को महाव्रत कहा जाता है।

एकदेशचारित्र पंचम गुणस्थानवर्ती अणुव्रती श्रावकों के होता है और सकलदेशचारित्र मुनिराजों के होता है।

अब इस ढाल में मात्र एकदेशचारित्र की चर्चा होगी। सकलचारित्र की चर्चा छटवीं ढाल में की जायेगी।

ध्यान रहे, पंचम गुणस्थानवर्ती श्रावकों के व्रत १२ प्रकार के होते हैं; जिनमें ५ अणुव्रत, ३ गुणव्रत और ४ शिक्षाव्रत होते हैं।

अब सबसे पहले पाँच अणुव्रतों की बात करते हैं ह्न

सम्यग्ज्ञानी होय बहुरि, दृढ़ चारित लीजै।
एकदेश अरु सकलदेश, तसु भेद कहीजै।।
त्रसहिंसा को त्याग, वृथा थावर न संघारै।
पर–वधकार कठोर निंद्य, नहिं वयन उचारै।।
जल मृत्तिका बिन और, नाहिं कछु गहै अदत्ता।
निज वनिता बिन सकल, नारि सौं रहै विरत्ता।।
अपनी शक्ति विचार, परिग्रह थोरो राखै।

इसकी पहली ही पंक्ति में कवि यह कह रहा है कि पहले सम्यग्ज्ञानी होओ; उसके बाद चारित्र धारण करने की बात करना। चूँकि सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान एक साथ पैदा होते हैं; इसलिए न केवल सम्यग्ज्ञानी, साथ में सम्यग्दृष्टि होने की भी बात है।

इसप्रकार यह सुनिश्चित है कि सम्यग्दृष्टि और सम्यग्ज्ञानी होकर ही चारित्र धारण किया जाता है ह्न यहाँ एक बात यह कही और दूसरी बात यह है कि चारित्र को धारण करो तो दृढ़ता से करो, दृढ़ चारित्र धारण करो, यों ही ढुलमुल व्रतों को ले लेना और उन्हें जैसे–तैसे ढोते रहने से कुछ भी होनेवाला नहीं है।

यह तो पहले कह ही चुके हैं कि वह चारित्र दो प्रकार का होता है। १. एकदेशचारित्र और २. सकलदेशचारित्र।

अब यहाँ एकदेश चारित्र की बात आरंभ करते हैं। उसमें सबसे पहले पाँच अणुव्रतों की चर्चा आती है।

त्रसहिंसा को तो पूर्णत: त्याग दे और बिना प्रयोजन स्थावर जीवों की भी हिंसा नहीं करें ह्न यह अहिंसाणुव्रत है, दूसरे के जीवन को खतरे में डालनेवाले कठोर और निंदनीय वचन नहीं बोलना सत्याणुव्रत है, जल और मिट्टी को छोड़कर अन्य किसी भी वस्तु को बिना दिये नहीं लेना अचौर्याणुव्रत है, धर्मानुकूल विवाहित अपनी पत्नी को छोड़कर अन्य सभी स्त्रियों से विरक्त रहना ब्रह्मचर्याणुव्रत है और अपनी शक्ति के अनुसार सीमित परिग्रह रखना परिग्रह परिमाणाणुव्रत है।

पंचम गुणस्थानवर्ती श्रावक त्रसहिंसा का त्यागी होने पर भी स्थावर जीवों के घात से पूर्णत: नहीं बच पाता है; क्योंकि घर बनाना, व्यापार करना आदि ऐसे कार्य हैं, जिनमें पृथ्वीकायिक जीवों का घात होता है; नहाना–धोना आदि ऐसे कार्य हैं, जिनमें जलकायिक जीवों का घात होता है; रोटी बनाना आदि ऐसे कार्य हैं, जिनमें अग्निकायिक जीवों का घात होता है; पंखा चलाना आदि ऐसे कार्य हैं, जिनमें वायुवायिक जीवों का घात होता है और साग–सब्जी आदि का उपयोग ऐसा कार्य है, जिसमें वनस्पतिकायिक जीवों का घात होता है। यही कारण है कि यहाँ इनका विना प्रयोजन घात नहीं करने की बात कही गई है।

'वृथा थावर न संहारे' ह्न यह कहकर उक्त सम्पूर्ण कथन को दौलतरामजी ने एक पंक्ति में समेट दिया है। इसीप्रकार सत्यादि व्रतों को भी एक–एक पंक्ति में ही प्रस्तुत कर दिया है।

जो क्रियायें अणुव्रतों में गुण पैदा करें, उन्हें गुणव्रत कहते हैं। ये गुणव्रत तीन प्रकार के होते हैं; जो इसप्रकार हैं ह्न दिग्व्रत, देशव्रत और अनर्थदण्डव्रत।

इनकी चर्चा करते हुये दौलतरामजी लिखते हैं ह्न

दश दिशि गमन प्रमान ठान, तसु सीम न नाखै।।
ताहू में फिर ग्राम, गली गृह बाग बजारा।
गमनागमन प्रमान, ठान अन सकल निवारा।।
काहू की धन–हानि, किसी जय–हार न चिन्तैं।
देय न सो उपदेश, होय अघ वनज कृषी तैं।।
कर प्रमाद जल भूमि, वृक्ष पावक न विराधै।
असि धनु हल हिंसोपकरन, नहिं दे यश लाधै।।
राग–द्वेष करतार कथा, कबहूँ न सुनीजै।
औरहु अनरथ दंड, हेतु अघ तिन्हैं न कीजै।।

दशों दिशाओं में जीवनपर्यंत के लिये गमनागमन का परिमाण सुनिश्चित कर लेना और उस की गई सीमा का उल्लंघन नहीं करना दिग्व्रत नाम का गुणव्रत है। दिग्व्रत में की गई मर्यादा में समय सीमा को कम करके गाँव, गली, घर, बाग, बजार आदि की मर्यादा बाँधकर गमनागमन का परिमाण सुनिश्चित कर लेना और उतने समय उक्त सीमा के बाहर नहीं जाना देशव्रत है।

व्रती श्रावक किसी की धनहानि और किसी की जीत–हार के बारे में चिन्तवन न करे; जिसमें अधिक हिंसादि पाप हों, ऐसे व्यापार और कृषि आदि करने का उपदेश न दे; प्रमाद के वश होकर बिना प्रयोजन भूमि, जल, अग्नि, वायु और वृक्षों की विराधना नहीं करे; हिंसा के उपकरण तलवार, धनुष, हल देकर यश कमाने की कोशिश नहीं करे; जो कथायें या चर्चा–वार्ता राग–द्वेष को प्रोत्साहन देनेवाली हो, उन कथाओं की चर्चा–वार्ता कभी भी नहीं करे। इनके अतिरिक्त बिना प्रयोजन और भी पाप नहीं करे। यह अनर्थदण्डव्रत है। **(क्रमश:)**

शिविर पत्रिका

शिविर पत्रिका

(पृष्ठ 1 का शेष ...)

10. **श्री दिगम्बर जैन मंदिर, खजांची की नसियाँ :** यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित सुनीलजी शास्त्री, शाहगढ़ द्वारा धर्मप्रभावना हुई।

11. **श्री दिगम्बर जैन मंदिर, तेरापंथियान, जौहरी बाजार दड़ा :** यहाँ पण्डित विक्रान्तजी पाटनी, जयपुर द्वारा धर्मप्रभावना हुई।

12. **श्री महावीर दिगम्बर जैन उ. मा. विद्यालय, नगर विभाग:** यहाँ प्रात: पण्डित अनुजकुमारजी शास्त्री, जयपुर के प्रवचन हुये।

13. **श्री महावीर पब्लिक स्कूल, सी-स्कीम:** यहाँ पण्डित प्रशान्तजी उखलकर, जयपुर के प्रवचनों का लाभ मिला।

14. **श्री महावीर दिगम्बर जैन उ.मा. विद्यालय, सी-स्कीम :** यहाँ पण्डित अभिषेक जी शास्त्री, केलवाड़ा द्वारा धर्मचर्चा की गई।

उपर्युक्त समस्त विद्वान श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के छात्र ही थे।

मुकुन्दभाई खारा का सम्मान

मुमुक्षु समाज के जाने-पहचाने आदरणीय **श्री मुकुन्दभाई खारा** पूज्य कहान गुरुदेव श्री के शासन प्रभावना, तत्त्वप्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान एवं आध्यात्मिक तथा सामाजिक जीवन के श्रेष्ठ मूल्यों के प्रति 50 वर्ष से भी अधिक समय से अनेक संस्थाओं में सेवारत हैं।

अत: दीपावली के अवसर पर दिनांक 7 नवम्बर, 07 को देवलाली में समस्त मुमुक्षु समाज की ओर से उनका सम्मान किया जायेगा। इस अवसर पर सभी को पधारने हेतु हमारा हार्दिक निवेदन है, इसी अवसर पर दिनांक 6 से 10 नवम्बर, 07 तक आयोजित दिपावली पूजन-विधान एवं आध्यात्मिक व्याख्यानमाला का लाभ भी आपको प्राप्त होगा।

कृपया आपके आगमन की सूचना निम्नलिखित पते पर देने की कृपा करें ह्न

173/175, मुम्बादेवी रोड़, मुम्बई ह्न 400002. फोन नं. 23425241

पूज्य श्री कानजी स्वामी स्मारक कहान नगर, लामरोड़, देवलाली ह्न 422401.

स्लिपडिस्क रोगी ध्यान दें !

सम्पूर्ण उपचार बिना दवा, बिना कसरत, बिना चीरफाड, बिना आराम किए विश्व की नवीनतम तकनीक माइक्रो एक्यूप्रेशर द्वारा शीघ्र उपचार।

डॉ. पीयूष त्रिवेदी (मो.) 09828011871

गोल्ड मेडलिस्ट, बी.ए. एम.एस., एम.डी. (एक्यू.)

डिप्लोमा इन योगा, सुजोक (मास्को) एफ.ए.आर.सी. एस. (लंदन)

मेडिनोवा पोली क्लीनिक, केसरगढ, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर

समय : सायं 6 बजे से 9 बजे तक, रविवार को प्रात: 8 से 12 बजे तक

नोट-एक्यूप्रेशर सेवा समिति द्वारा 300 से अधिक नि:शुल्क शिविर आयोजित।

अन्य रोग : जोडों का दर्द, गर्दन का दर्द, मोटापा, मायोपैथी, मानस विकृतियां, मधुमेह तथा उच्च रक्तचाप आदि की सफल चिकित्सा।

वैराग्य समाचार

01.कानपुर निवासी श्री आलोक जैन, अनिल जैन एवं अतुल जैन की माताजी **श्रीमती सरलादेवी जैन** का 86 वर्ष की अवस्था में हृदयगति रुक जाने से दिनांक 9 सितम्बर, 07 को देहावसान हो गया। आप धार्मिक विचारधारा की स्वाध्यायप्रेमी महिला थीं, तथा कानपुर में प्रतिवर्ष लगनेवाले बाल-युवा संस्कार शिविर की प्रेरणा स्रोत थीं।

02.छिन्दवाड़ा निवासी श्री तरुणजी पाटनी का दिनांक 24 अगस्त, 07 को निधन हो गया। ज्ञातव्य है कि आप छिन्दवाड़ा युवा फैडरेशन के अध्यक्ष होने के साथ ही सक्रिय समाजसेवी थे तथा कुछ समय से कैंसर से पीड़ित थे।

03.छिन्दवाड़ा निवासी श्री प्रबोधचंदजी जैन का देहविलय हो गया। आप धार्मिक एवं स्वाध्यायप्रिय व्यक्ति थे। आपके द्वारा गुरुदेव श्री के प्रवचनसार पर हुए प्रवचन दिव्यध्वनिसार के 2 भागों के अनुवाद का कार्य किया गया है।

04.इन्दौर निवासी पण्डित श्री नाथूलालजी शास्त्री का दिनांक 9 सितम्बर, 07 को 97 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप राष्ट्रीय संस्था दिगम्बर जैन महासमिति के संस्थापक रहे हैं तथा 30 वर्षों तक आपने महासभा परीक्षा बोर्ड का संचालन भी किया है।आप देश के विश्रुत प्रतिष्ठाचार्य होने के साथ ही दिगम्बर जैन महाविद्यालय, इन्दौर के प्राचार्य तथा अखिल भारतीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद के अध्यक्ष भी थे।

05.नोएडा निवासी डॉ.धन्यकुमार जैन का दिनांक 9 सितम्बर, 07 को निधन हो गया। आप कुछ समय से बीमार चल रहे थे। ज्ञातव्य है कि आप अखिलभारतवर्षीय जैसवाल जैन महासभा के अध्यक्ष पद पर रहते हुए अनेक संस्थाओं से जुड़े रहे साथ ही तीर्थक्षेत्रों की रक्षा एवं समाज एकता व उत्थान में भी आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

दिवंगत आत्माएँ शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों, यही मंगलकामना है।

ह्न प्रबंध सम्पादक जैन पथ प्रदर्शक

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पं.संजीवकुमार गोधा**,डबल एम.ए.जैनविद्या व धर्मदर्शन; इतिहास, नेट, एम.फिल एवं **पं. जितेन्द्र वि.राठी**, साहित्याचार्य
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- ४ बापूनगर, जयपुर - ३०२०१५ (राज.)
फोन : (०१४१) २७०५५८१, २७०७४५८
फैक्स : (०१४१) २७०४१२७